ज्ञानमीमांसा (चार्वाक दर्शन)

TDC-I. & Sub.

डॉ. विजय कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग
एल. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

ज्ञानमीमांसा में ज्ञान की उत्पत्ति, प्रकार, प्रमाण, सीमा आदि पर प्रकाश डाला जाता है। भारतीय दर्शन की सभी शाखाओं ने प्रत्यक्ष को एक प्रमुख प्रमाण के रूप में मान्यता दी है। किन्तु चार्वक दर्शन सिर्फ़ प्रत्यक्ष को ही ज्ञान का साधन माना गया है। इस दर्शन के प्रवर्तक वृहस्पति ने वार्हस्पत्यसूत्र में कहा है कि प्रत्यक्षमेव प्रमाणं अर्थात् प्रत्यक्ष ही प्रमाण है। यही कारण है कि चार्वक को प्रत्यक्षवादी दर्शन कहा गया। यहाँ यह बता देना आवश्यक जान पड़ता है कि कौन से दर्शन कितने प्रमाण मानते हैं–

चार्वाक– प्रत्यक्ष

पूर्वमीमांसा एवं अद्वैत वेदान्त– प्रत्यस, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि

न्याय– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द

सांख्य– प्रत्यक्ष, अनुमार, शब्द

जैन– प्रत्यक्ष तथा परोक्ष (अनुमान, शब्दादि)

बौद्ध एवं वैशेषिक– प्रत्यक्ष और अनुमान

प्रत्यक्ष

प्रत्यक्ष शब्द की उत्पत्ति प्रति और अक्षण के संयोग से हुई है। इसका अर्थ होता है कि आँख के सामने होना। यदि सिर्फ़ इसी अर्थ को ग्रहण किया जाए तो प्रत्यक्ष का क्षेत्र संकुचित हो जाएगा। क्योंकि प्रत्यक्ष का अर्थ सिर्फ़ आँख के द्वारा प्राप्त ज्ञान ही नहीं समझा जाता बल्कि कान से सुनना, जीभ से चखना, नाक से सूंघना, त्वचा से स्पर्श करना भी प्रत्यक्ष के अन्तर्गत आते हैं इसलिए प्रत्यक्ष ज्ञान उसे कहते हैं जो इन्द्रिय तथा वस्तु के सन्निकर्ष से उत्पन्न होता है। इस ज्ञान में इन्द्रिय, पदार्थ और इन दो के बीच सन्निकर्ष अर्थात् सम्बन्ध का होना अनिवार्य होता है। जैन दर्शन को छोड़कर इसी को प्रत्यक्ष माना गया है। चार्वक दर्शन इन्द्रिय प्रत्यक्ष को ही प्रत्यक्ष मानता है और इसी को मात्र एक प्रमाण मानकर अनुमान आदि अन्य प्रमाणों का खण्डन करता है।

अनुमान का खण्डन

अनु और मान के संयोग से अनुमान शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है वह ज्ञान जो बाद में प्राप्त होता है। वह किसी पूर्व ज्ञान के पश्चात आता है। वह पूर्व ज्ञान व्याप्ति का होता है। एक के होने पर दूसरे का होना अनिवार्य होता है तो ऐसे सम्बन्ध को व्याप्ति कहते हैं। यही सम्बन्ध अनुमान का मूलाधार है।

अनुमान में तीन पद होते हैं- पक्ष, साध्य और हेतु/लिंग। हेतु और साध्य के बीच व्याप्ति सम्बन्ध होता है। जब पक्ष और हेतु सम्बन्धित देखा जाता है तो अनुमान किया जाता है कि पक्ष और साध्य सम्बन्धित हैं।

पर्वत अग्नियुक्त है- पर्वत पक्ष है

क्योंकि वहां धुआँ है- धूम हेतु है

जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ अग्नि है अग्नि साध्य है।

यहाँ पर्वत पक्ष है। पक्ष अनुमान का वह अवयव है जिसके सम्बन्ध में अनुमान किया जाता है। धूम हेतु है जिसके द्वारा पक्ष में साध्य का होना बतलाया जाता है। और, पक्ष के सम्बन्ध में कुछ भी सिद्ध किया जाता है उसे साध्य कहते हैं।

यहाँ चार्वक कहता है कि सभी धूमयुक्त स्थान अग्नि युक्त है ऐसा कहना सार्थक हो सकता है जब सभी धूमयुक्त स्थानों को देखा जाए। किन्तु ऐसा संभव नहीं है। दूसरा यह कि जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ अग्नि है, परन्तु सभी अग्नियुक्त पदार्थ धूमयुक्त होपता है यह आवश्यक नहीं है, जैसे अग्नियुक्त लोहा। अतः धूम और अग्नि का व्याप्ति सम्बन्ध प्रतय्क्ष बाधित है।

उपमान का खण्डन

झो ज्ञान सादृश्यता अथवा उपमा पर आधारित हो उसे उपमान कहते हैं। गाय की तरह किसी जानवर को देखकर नीलगाय समझ लेना उपमान कहलाता है। उपमान के द्वारा जिस ज्ञान की प्राप्ति होती है उसे उपमिति कहते हैं। उपमान अनुमान समावेशित ज्ञान है जब अनुमान ज्ञान बाधित है तो उपमान स्वयं बाधित हो जाता है।

शब्द का खण्डन

शब्द जब प्रमाण के लिए प्रयोग होता है तो इसका अर्त होता है महापुरुषों के वचन जिन्हें हम उनसे सुनते हैं अथवा किसी ग्रन्थ में उनके संकलित रूप को पढ़ते है तथा उन वचनों पर पूरी आस्था रखते हैं। शब्द ज्ञान दो प्रकार के होते हैं- वैदक और लौकिक। वैदिक ज्ञान इसलिए बाधित है कि उसकी प्रामाणिकता के विषय में मतभेद है। कोई उसे अपौरुषेय मानता है तो कोई पौरुषेय। चार्वाक स्पष्ट रूप से कहता है कि वेदों की रचना चतुर पुरोहितों द्वारा की गई है। दूसरा लौकिक प्रमाण भी कोई निश्चित ज्ञान नहीं दे सकते। क्योंकि इनमें आपसी मतभेद है, ये एक-दूसरे का खण्डन करते हैं। महापुरुषों के वचनों को हम वहाँ तक सही मान सकते हैं जहाँ तक वे प्रत्यक्ष का बोध कराते हैं। किन्तु भूत और भविष्य के लिए हम उनके वचनों में विश्वास नहीं रख सकते।चार्वक का कहना है कि शब्द प्रमाण भी एक तरह से अनुमान है